9

सार उपदेश १—मानव जीवन का महत्व

वचन सत्संग सन्त कृपालसिंह जी महाराज, २६ जुलाई १९६६

(सत्संदेश अक्तूबर 1966)

जन्मदिवस के भण्डारे का यह पहला सत्संग हम प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें मानव जीवन का महत्व बखान किया है। हजूर के कथनानुसार, "महापुरुष तीन पहलुओं से उपदेश देते हैं, पहला देह के लिहाज़ से, दूसरा मन के लिहाज़ से, किस प्रकार यह हमें जलील लिये फिरता है, और तीसरे आत्मा को कैसे हम आज़ाद करके प्रभु से जुड़ सकते हैं?" भण्डारे का यह पहला सत्संग देह के बारे में है।

आसमानों पर उड़ने वाले जो हैं, वही आसमानों पर उड़ने वालों की कुछ कैफ़ियत (अवस्था, गति) बयान करें तो करें, नहीं तो और किसी को क्या है जो ज़मीन पर रींगने वाले हैं। मौलाना रूम साहब ने फरमाया, एक कबूतर उड़ा जा रहा था, बड़ी तेज़ी से, क्योंकि आपको पता है कबूतर की रफ़्तार भी बड़ी भारी तेज़ है, ६०, ७०, ८०, मील। नीचे एक चूहा रींगता भागता चला जा रहा था। उसने (कबूतर ने) देखा, यह भी बड़े शौक से भागा चला जा रहा है। उस से पूछा, अरे भई तू कहां जाना चाहता है? कहने लगा, मैं मक्के शरीफ़ जाना चाहता हूं। कहने लगा, तू बड़ी तेज़ी से जा रहा है, कब पहुंचेगा? कि जब पहुंचेंगे। रहम (दया) आ गया उसकी हालत पर। उसको अपने पंजे में पकड़ लिया, जाकर मक्के में पहुंचा दिया। तो भई जो जिस्म-जिस्मानियत में रींगने वाले लोग हैं, वह आसमानों पर उड़ने वालों की क्या कैफ़ियत बयान कर सकते हैं? सच्ची बात तो यह है। 'वली रा वली मी शनासद' (महात्मा को महात्मा ही जान सकता है)। ज़ाहिरा शक्ल इन्सानी ज़रूर रखते हैं, मगर वह कुछ और भी होते हैं। तो इस लिये कहा गया है कि:—

वली अल्लाह बर क़यासे खुद मगीर।
गर्चे दर नविश्तन यकसां आयद शेरो-शीर।

वली अल्लाह (महात्मा) को ज़ाहिरी शक्ल पर मत लो, कि लफ्ज़ शेर और शीर—एक ही तरह से ज़ाहिरी शक्ल है, मगर बड़ा भारी दोनों में फ़र्क है। एक तो फाड़कर खा जानेवाला जानवर है और दूसरा आधार देने वाला, दूध। तो इन्सानी शक्ल रखने वाले तो सब ही हैं। और महापुरुष जब आते हैं, बयान भी बड़ी तारीफ करते हैं, मनुष्य के जामे (चोले) की, सब ऋषि, मुनि, महात्मा जो आये, सबने इसकी बड़ी महिमा गाई है। मगर उनमें और आम लोगों में फर्क क्या है? वह (महापुरुष) भेजे हुए आते हैं। किस लिये? कौन बयान करते हैं उनका हाल? मैं यह अर्ज़ कर रहा था, जो ज़मीन पर रींगने वाले कीड़े हैं, चूहे हैं, वह कैसे जानेंगे कि वह कहां से आये? कबूतर कहां से उड़ता चला आया और कहां जा रहा है? तो वही खुद अपना इशारा आप न दें, संत अपनी कहानी अपनी ज़बानी न सुनायें, तो हमें यकीन कैसे आये? गुरु अर्जन साहिब ने फरमाया,—

जिन तुम भेजे तिनही बुलाये,
सुख सहज सेती घर आवो।

जिन्होंने तुमको, ऐ इन्सानो! इस दुनिया में भेजा था, वही तुमको फिर बुलाने आया है। क्या कहता है? चलो अपने घर, सुख और सहज से,

आराम में जीवन बसर (व्यतीत) करो। वह आते हैं। कौन आता है? वह आप आता है। जिन्होंने भेजा था, वही आ जाता है लेने को। वह क्या कहता है? चलो भई, यह घर तुम्हारा घर नहीं।

धाम अपने चलो भाई
पराये देस क्यों रहना।

यह देस तुम्हारा देस नहीं, यह कौमें तुम्हारी कौमें नहीं। यह कौमें तुमने बनाई हैं। परमात्मा ने तो इन्सान बनाये। इन्सान इन्सान में कोई फर्क नहीं। यह कौमें, मजहबें, तूने धारण कीं, सिर्फ, फिर अपने घर जाने के लिये, वापस, जिसके लिये वसीला (माध्यम) चाहिये। और वसीला कौन हो सकता है? जो उस धाम से आया है। जिसको वह (प्रभु) भेजे, वही ले जा सकता है ना वहां? तो उन्होंने, महापुरुषों ने, अपनी खबर आप दी है। यही कबीर साहब ने कहा;—

कहैं कबीर हम धुर घर के भेदी
लाये हुकम हजूरी ॥

इकरार कर रहे हैं, हम धुर घर के भेद के जानने वाले हैं, "लाये हुकम हजूरी।" हम उस प्रभु का हुक्म लेकर आये हैं। क्या? "सुख सहज सेती घर आओ।" कहते हैं, "सूना पड़ा तेरा तख्त और ताज।" तेरा तख्त खाली पड़ा है। चल, तू क्यों दुनिया में भटक रहा है! हम कभी प्रभु की गोद में थे। सोचने वाली बात है। कभी थे। जब से आये हैं, अभी तक वापस नहीं गये, नहीं तो किसी और रंग में बैठे होते। तो जब हम दुनिया के थपेड़ों में बहते हुए दुखी और आतुर होते हैं, "नानक दुखिया सब संसार।"

देह धर सुखिया कोई न देखा
जो देखा सो दुखिया हो।

देह धरे का दण्ड सबको है। तो उस वक्त वह (महापुरुष) आ जाया करते हैं कि यह सुखी हो जाये। यह आत्मा, प्रभु के बच्चे हैं। यह अपने घर से बिछुड़े पड़े हैं मुद्दतों से। जब से बिछुड़े हैं, अब तक वापस नहीं आये। ऐसे मन-इंद्रियों की लपेट में यह बह गये, इनको घर की सूझ ही नहीं रही।

आवारगी नविश्त शुदा
खाना फरामोशद शुदा।

हमारी किस्मत में दरबदरी लिखी गई, अपना घर भी भूल गये। आत्मा चेतन स्वरूप है। इसका घर कहां है? महाचेतन प्रभु का!

आं गन्दा पीरे काबली
बस सहर करदन अजदगा।

कि काबुल के गन्दे पीर ने, क्या, काल ने, बड़ी होशियारी से ऐसा जादू डाल दिया है, कोई घर जाना ही नहीं चाहता। इतना हरेक इन्सान अपने अपने हाल में मस्त है कि कोई अपने घर को नहीं जाना चाहता है। दो घंटे और जीना चाहता है। तो इस भूल को निकालने के लिये महापुरुष आते हैं, हमको अपने घर वापस लाने के लिये। तो हमें क्या कहते हैं? कि ऐ इन्सान! तेरे तीन पहलू हैं। तू जिस्म रखता है—एक पहलू उनके उपदेश का। इसकी (जिस्म की) महानता, इसकी बड़ाई, इसमें क्या फ़ज़ीलत (बड़ाई) है? यह कब तक मिलता है? इसमें आप क्या कुछ कर सकते हो? एक तो इस तरह से उपदेश देते हैं। दूसरा वह समझाते हैं तुम घर से आये तो भूल कैसे गये? यह मन रखता है। मन के साथ लगकर इंद्रजाल में फंसा हुआ जिस्म और जगत का रूप बन रहा है, अपने आप को भूल रहा है। तीसरे, यह आत्मा खुद है, चेतन स्वरूप है। तीन पहलुओं से वह उपदेश देते हैं, महापुरुष। पहले जिस्म के लिहाज से, फिर मन के लिहाज से, फिर उसके बाद

आत्मा को बराहे-रास्त (सीधा) प्रभु के साथ जुड़ने के लिहाज़ से। आत्मा को बड़ा साफ कहते हैं, "तू थी सतनाम की गोती।" ऐ आत्मा! तू तो सतनाम की गोत वाली थी, A drop of the ocean of All-Consciousness (महाचेतन्यता के सागर परमात्मा की एक बिंदु) थी; कहां मन चूहड़े के साथ लग गई जो इन्द्रियों की जहरीयत में तुमको लिये फिरता है। जहर जब चढ़ जाये ना, न दिल सही न दिमाग सही। घर ही भूल गये। "इह जग काले वस किया।" यह काल के हवाले किया है। इसकी भी ज़रूरत है भई! क्यों ज़रूरत है?

काल-अकाल खसम का कीन्हा
इह प्रपंच बंधावन।

यह दुनिया का प्रपंच बनाना था ना, वहां अकाल था, वहां काल भी बनाना पड़ा। यह सारी सामग्री काल की है। Matter is all changing यह जिस्म काल है, "काल कंवारी काया।" काल के साथ इस जिस्म का मंगेवा (परिणय) हो चुका है। वह तो ले जायेगा एक दिन। तो हर पहलू से महापुरुष हमें समझाने का यत्न करते हैं; पहला इस देह के लिहाज़ से, शरीर के लिहाज़ से। दूसरा मन के लिहाज़ से—किस तरह दुनिया में हमको यह ज़लील किये फिरता है? और तीसरे, आत्मा को कैसे हम आज़ाद करके प्रभु से जुड़ सकते हैं? तीन पहलुओं से वह उपदेश देते हैं। तो आपके सामने इस वक्त कुछ शरीर के लिहाज से, कल सुबह कुछ मन के लिहाज़ से, कल शाम, कुछ आत्मा के लिहाज़ से— बात तो वही रोना है, तरीके तरीके से बयान करना है। समझने की बात है। तो सब से पहले वह यह कहते हैं—सारे ऋषि, मुनि, महात्माओं की एक ही मुत्तफ़िका (सहमत) राय है कि मनुष्य जीवन का दरजा सब पैदायश से ऊँचा है, बल्कि फरिश्तों को भी हुक्म दिया कि इसको (मनुष्य को) सिजदा (दंडवत) करो। "बाद अज खुदा बुजुर्ग तुई किस्सा मुख्तसर" कि प्रभु के बाद दूसरा दरजा इन्सान को है, यह प्रभु के साक्षात करने की जगह है। सारे महापुरुषों ने यह कहा और ज़ोर दिया कि इस शरीर को कायम (बनाये) रक्खो। किस लिये कायम रक्खो?

घट वसे चरणारबिंद रसना जपे गोपाल॥
नानक तिसही कारणे इस देही को पाल॥

तुम्हारे घट में प्रभु के चरणों का निवास हो और तुम उसके देखने वाले बनो, और उसके गुणानुवाद गाने वाले बनो— इसलिये। और यह काम, जो उसके देखने का है, केवल मनुष्य जीवन में ही हो सकता है, और किसी योनी में नहीं। तो इसलिये जितने ऋषि मुनि महात्मा आज दिन तक आये, किसी ज़माने में आये, किसी समाज, किसी मुल्क में आये, इसकी फ़ज़ीलत (बड़ाई) गाते रहे, और इस बात पर ज़ोर देते रहे कि इसको कायम रखो, जितना रख सकते हो। ऋषियों मुनियों ने ज़ोर दिया कि सौ साल कम से कम, जीने की ख़ाहिश करो। तो सौ साल ज़ीने के लिये भी तो सुमिरन चाहिये ना! जिस्म को कायम रखने के लिये सबसे बड़ी चीज़ क्या है? ब्रह्मचर्य की रक्षा! ब्रह्मचर्य की रक्षा होगी उतनी रूह पर्वाज़ (उड़ान) करेगी। समझे? जिनकी रूह पर्वाज़ नहीं करती (ऊपर नहीं जाती), वह ज़रा अपने गरेबान में मुंह डालकर देखें वह क्या हैं? क्या कर रहे हैं? यह बड़ी भारी ताकत है। तो जिस्म को कायम रखने के लिये, कबीर साहब ने कहा, कि इसको जितना रख सकते हो, रखो। अगर एक बार हाथ से निकल गई (यह अवधि) फिर या नसीब कब आये।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे
ऐहला जन्म गंवाया॥

जिस्म को कायम रखो। ठीक। किसलिये? प्रभु प्राप्ति के लिये। गुरु अमरदास जी साहब

ने बड़ा ज़ोर दिया है, जिस्म से फ़ायदा उठाने के लिये। जहां इसको कायम रखने के लिये उपदेश अभी आपके सामने रखा गया साथ ही साथ उससे फायदा उठाने के लिये भी कुछ, बहुत सारी बातें ऐसी कही हैं, जिनको कहने से भी हारम आती है। धृग लफ़्ज़ है, हज़ार बार लानत। कहते हैं खाना-पीना दो, इस जिस्म को कायम रखो। जिस्म को मज़बूत रखो, इसकी रक्षा करो। किस लिये? प्रभु प्राप्ति के लिये। अगर यह काम नहीं किया तो—"धृग धृग खाया"—समझे? "सबै हराम जेता कुछ काम।" बड़े साफ लफ़्ज़ हैं। फिर कहा, इस जिस्म को आराम दो, ताकि यह ज़्यादा देर ठहर सके, सोकर, relax करके। सब तरफ से ख्याल हटाकर उस तरफ अपनी तवज्जो को लगाओ। अगर यह नहीं किया तो—"धृग धृग सोया"—खाकर ख़र्राटे मारकर सोता रहा, तो उस पर हज़ार-हज़ार बार लानत। इस (देह) को कायम रखो, गर्मी-सर्दी से बचाओ ताकि ज़्यादा देर कायम रह सके। अगर इसके बनाने में, हार-सिंगार में ही घंटे लगा दिये?—फ्रांस में एक आदमी भागा जा रहा था, एक ड्रेस लिये, लेडी का। क्यों जल्दी में जा रहे हो? कहने लगा, मैं अपनी लेडी का लिबास (कपड़े) बदलवा कर वक्त पर पहुंच जांऊ ताकि वक्त न गुज़र जाये, दोबारा लिबास बदलने का! यह हालत आजकल हो रही है, माफ करना। घंटों बैठकर अपने जिस्म को बनाने में लगा देंगे, क्या स्त्री, क्या पुरुष, मगर भजन के लिये घंटा दो निकालना मौत के बराबर है! कुछ सच्ची सच्ची बातें भी कहनी होंगी भई! फिर कहते हैं:—

धृग कुटुम्ब सरीर सहित स्यों,
जित हुण ख़सम न पाया॥

जिस्म को पाने पर भी हज़ार बार लानत है, जिस गरज़ के लिये जिस्म मिला है अगर वह गरज़ पूरी न हुई। लेना-देना खुशी से निभाओ, सब कुछ इसी के लिये हम नहीं आये, बाल-बच्चे पैदा करने, उसी के बनाने के लिये। अरे भई इसलिये आए हो, लेना-देना खत्म हो जाये और अपने घर जाओ। "जित हुण खसम न पाया।" अगर मनुष्य जीवन पाकर प्रभु को नहीं पाया तो हज़ार हज़ार बार लानत है, हमारे हरेक काम पर। सबब? "पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे ऐहला जन्म गंवाया।" एक बार मनुष्य जीवन की पौड़ी हाथों से निकल गई, फिर यां नसीब कब यह मिले। और यह मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिलता है। चौरासी लाख जीया-जून की सरदार जूनी यह मानी गई है। इसी में प्रभु प्राप्ति हो सकती है। ऋषियों-मुनियों ने यही कहा। जब सब तन बन चुके तो इन्सान का तन जब बना है, तो ऋषियों के लिये आता है कि उन्होंने इन्सानी तन को कबूल (स्वीकार) किया, इस में दाखिल हुए। वह मनुष्य जीवन हमें मिला हुआ है, जो हम लिये फिर रहे हैं। तो इस मनुष्य जीवन को पालना है। ठीक। मगर इसको कभी देखा है analyse (खोज) के, यह क्या करता है? महापुरुष कहते हैं, देखो, इस मनुष्य शरीर से कभी यह सवाल तो करो, मनुष्य जीवन तुझे मिला है, तूने धारण किया है। महापुरुष तीन तरह से उपदेश देते हैं, मैंने कहा था। एक देह को direct (निर्देशन) करते हैं, एक मन को, एक आत्मा को direct करते हैं। तो देह को direct करते हुए क्या कहते हैं? किसी और को नहीं, अपने-आप को। गुरु अमरदास जी साहब ने ७०-७२ साल की तलाश के बाद हकीकत को पाया, तो क्या कहते हैं?

ऐ सरीरा मेरिया, इस जग में आय के,
क्या तुध कर्म कमाया॥

हम दूसरों को कहते ना! कहते हैं बता, तू बता भई, तूने क्या किया जब से तू जग में आया? पहला संगी-साथी है ना हमारा, जो हमारे साथ आता है, और जाते हुए साथ नहीं जाता। एक

यह ऐसा, क्या कहना चाहिये, touchstone है, पारस है, जिसके साथ लगकर हमने बड़ा भारी फायदा उठाना था। यह और कामों में लग गया। तो कौन उपदेश कर रहा है? महापुरुष हमें उपदेश करने का तरीका सिखलाते हैं कि तुम देह रखते हो। देह से पहले पूछो, ऐ शरीर! जब से तू दुनिया में आया तूने क्या कर्म किया। "क्या कर्म कमाया तुध सरीरा जां तू जग में आया।" किस दिन से? जिस दिन से तू जग में आया है, क्या कर्म कमाया है? क्या मनुष्य जीवन पाकर जो कुछ इससे फायदा उठाना था, उसमें तू मददगार हुआ है, या रुकावट बना है? तो शरीर से फायदा उठाना था। इसी में फंसा रहा सारी उम्र।

जिन हर तेरा रचन रचाया
सो हर मन न बसाया ॥

अरे जिसने यह मनुष्य जीवन बनाया उसको हृदय में बसाना था, तूने, उसको नहीं बसाया। उपनिषद कहते हैं, वह कौन सा महान कारीगर है, जिसने इस शरीर की रचना की है। समझे? Wonderful house we live in (आश्चर्यजनक यह देह-रूपी मकान है, जिसमें हम रह रहे हैं)। इसमें नौ सुराख हुए इसमें रहने वाला बाहर भाग नहीं सकता। सांस बाहर जाता है, बाहर रह नहीं सकता। इतना controlled (नियन्त्रण में) है। तो शरीर को address (सम्बोधन) करते हैं, बता जिसने तेरी रचना की है, कभी उसका भी ख्याल किया है? कहते हैं, यह (जिस्म) मिला था, इसलिये कि प्रभु तेरे घर में है, था नहीं।

ऐ सरीरा मेरिया जां हर तुध में जोत धरी,
तां तू जग मे आया ॥

इन्सान का शरीर कब बनता है? जब वह ज्योति साथ बसती है तो, पहले नहीं। जैसे एक दाना हो ना! दाना किसी चीज़ का हो, कनक (गेहूं) का है, उसमें उसी की तासीर है, कनक के दाने के अन्तर। वह बनाने वाली जो तारीफ़ है, वह superior authority (सिर ताकत) है। उसको परमात्मा कहते हैं। कहते हैं, ऐ शरीर, तू बना था—पहले बना कैसे? उस बनाने वाले ने बनाया ना! एक कतरे से इन्सानी शक्ल बना दी, वह जो एक कतरा था ना, बिन्दु—बिन्दु में जो ताकत काम कर रही थी, उसको जानना था। तुझे अपने जिस्म के मुतल्लिक भी कुछ इल्म (ज्ञान) नहीं है। मुद्दतें हो गई तुम्हें यह जिस्म लिये फिरते हुए—किसी को दस साल, बीस साल, पचास साल। सब कुछ जाना, बहुत कुछ जाना, नहीं जाना तो उसके बनाने वाले को नहीं जाना जो इसकी रचना के मूल में है। अगर वह न हो यह शरीर ही न बने। दाना हो, ज़मीन में दबा दो। पानी दो तो उगेगा ना! वह उगने वाली शक्ति ही उगा सकती है ना! दाना तो कुछ नहीं कर सकता। तो इसी तरह एक बिन्दु से जिसने इन्सानी रचना की है, अरे जिसके सहारे तू इस जिस्म में कायम है, ऐ इन्सान! इस शरीर ही में तूने उसको अपने अन्तर में प्रगट करना था। उसको तो किया नहीं।

गुरु प्रसादी हर मन बसाया
पूरब लिखेया पाया ॥

गुरु कृपा से तू उसको अपने हृदय में बसा सकता था। इस शरीर को किसी महापुरुषों के चरणों में डालना था, जहां तू इस शरीर से पूरा फायदा उठा सकता था, ताकि यह शरीर प्रवान हो जाता। "सा काया जो सत्गुरु सेवा लाय।" जो सत्गुरु की सेवा में लगा, वही काया या शरीर कहलाने की हकदार है, बाकी नहीं। तो गुरु कृपा ही से इस जिस्म से इन्सान पूरा फायदा उठा सकता है। इसी में वह परमात्मा बैठा है। कुरान शरीफ़ कहता है कि मैं—'कुन्तु कुनज़न मख़फ़ियन'

—मैं एक मख़फ़ी (गुप्त) खज़ाना तुम में छुपा बैठा हूं।

सबो घट मेरे साईंयां सुनजी सेज न कोय।
बलिहारी तिस घट के जां घट परगट होय॥

जिस घट में वह प्रगट है—है सब में—वह कन्ट्रोलिंग पावर (करन-कारण सत्ता) है, नहीं तो हम इस जिस्म से भाग जायें। जिस्म में खास वक्त तक इसको पूर्व कर्मों के मुताबिक कायम रखता है, और उस वक्त तक नहीं हटता जब तक इसके पिछले कर्म क्षीण नहीं होते। तो कहते हैं, "ऐ सरीरा मेरिया, इस जग में आय के क्या तुध कर्म कमाया, क्या कर्म कमाया तुध सरीरा जां तू जग में आया। जिन हर तेरा रचन रचाया सो हर मन न वसाया।" कहते हैं, अफसोस की बात है। एक एक सांस तीन लोक का मोल है। कितनी मुद्दतें इस जग में आये गुज़र गई, हमने इस से (मनुष्य जीवन से) क्या फायदा उठाया है? पर यह कैसे फायदा उठा सकते हैं? जो काया किसी सत्गुरु के चरणों में जाए। तब। नहीं तो मनुष्य जीवन जैसे मिला जैसे न मिला, बल्कि हैवानों (पशुओं) से भी बदतर हैं। "गुरु प्रसादी हर मन वसेया पूरब लिखिया पाया।" तो कहते हैं जब गुरु कृपा कर दे यह परवान हो सकता है, प्रभु इसके घट में प्रगट हो सकता है। तो कहते हैं क्या तेरा आखिरी (अन्तिम) हशर (परिणाम) होगा?

कहसी नानक इह सरीर परवान होवा,
जिन सत्गुरु स्यों चित्त लाए।

जिसने किसी सत्स्वरूप हस्ती के चरणों को हृदय में बसाया है, चित्त के अन्तर उनका प्यार धारण किया है, उनकी आज्ञा का पालन किया है, वही लोग केवल, मनुष्य जीवन से फायदा उठा सकते हैं, किसी समाज में हों! तो मनुष्य जीवन पाकर सबसे बड़ा काम जो हमारे सामने है, मनुष्य जीवन में—मनुष्य जीवन को कह रहे हैं कि ऐ शरीर! तू जबसे आया है, क्या काम किया है तूने? क्या घर पहुंचाने का काम भी किया है कि लोगों को बदराह (पथ भ्रष्ट) करने का काम किया है? जो तेरी रचना का मूल था, तेरे साथ बस रहा था, उसकी तरफ जाकर उसको अन्तर में प्रगट करना था। क्या तू नज़दीकी में ला रहा है कि दूर जा रहा है?

कीरत करम के विछड़े
कर किरपा मेलो राम।

हे प्रभु! अपने कर्मों के अनुसार हम दिनों-दिन तुम से दूर जा रहे हैं। समझे? मनुष्य जीवन पाकर भी अगर उसको नहीं पाया, मनुष्य जीवन में ही, तो इस की क्या कीमत है?

धैन दुधे ते बाहरी किते न आवे काम।

दूध देने से गाय रह जाए उसे कौन रखता है? सब्जी, अगर उसकी नमी जाती रहे, वह हैवान (पशु) भी नहीं खाते। अरे मनुष्य जीवन पाकर ऐ मनुष्य, ऐ इन्सानी शरीर! बता तू ने क्या कर्म किया है इसमें? तेरे रहने वाला जो है, उसको प्रभु तक पहुंचाने में तूने मदद करनी थी। बता तूने क्या कुछ किया है?

ऐ सरीरा मेरिया मैं तुध रुलदी देखी,
ज्यों धर ऊपर छार।

ऐ काया तेरा हशर (परिणाम) मैं ने देखा है, मिट्टी पर मिट्टी की तरह खेह (धूल) उड़ते हुए। पाकिस्तान के नजारे बताते हैं, इस जैसे शरीरों को कुत्ते खा रहे थे। शरीर को address (सम्बोधन) करते हैं, शरीर से फायदा उठाओ। हमें कभी शरीर की होश ही नहीं है। इसी से फायदा उठाना था। एक-एक सांस तीन लोक का मोल था, मगर इससे फायदा नहीं उठाया। फिर वह क्या सिखलाते हैं? कि भई इस शरीर

से यह काम करो। यह आंखें किस लिये दी थीं प्रभु ने? देखने के लिये। किसको देखने के लिये? "सतगुरु मिलिये दिव्य दृष्टि होई।" गुरु ग्रन्थ साहब की आखिरी तुक क्या है? "हरि दरस तुहारो हो।" हे प्रभु तेरे दर्शन नसीब हों। मनुष्य जीवन में ही उसके दर्शन पा सकते हो, किसी और योनी में नहीं। तो महापुरुष address (सम्बोधन) करते हैं, सिखाते हैं, अरे भई:—

ऐ नेत्रो मेरियो हरि तुम में ज्योति धरी,
हरि बिन अवर न देखो कोई,

आँखों को address (सम्बोधन) करते हैं, ज्योति दी थी। किस लिये? प्रभु को देखने के लिये, सबके अन्तर, मगर तू दुनिया को देखता रहा।

हरि बिन अवर न देखो
कोई नदरी हरि निहालिया।

उसके बगैर देखो नहीं किसी को। मगर उसका देखना कब नसीब होता है? जब वह दया करे। उसकी नज़र कहां से आएगी? जिसमें वह प्रगट है। समझे? जो इस इंतेजार में होते हैं—फरीद साहब थे। कहते हैं उलटे लटक गये। उनके तन में, कहते हैं, परिन्दों (पक्षियों) ने घोंसले बना लिये थे। कहते हैं, ऐ परिन्दो! मेरा सारा मांस खाजाओ, मेरी आंखें मत खाना। क्योंकि—"मोहि पिया देखन की आस।" यह आंखें बाकी रह जायें, उसके देखने की आस बाकी है। जब तक ऐसी तांघ कहो, जबरदस्त ऐसी लगन न हो—हमने आंखों से भी फायदा न उठाया। देखना था उस को, देखते रहे इस संसार को।

एह विस संसार जो तू देखदा,
हरि का रूप है, हरि रूप नदरी आया।।

अरे यह बिस का, ज़ाहिरियत का भरा हुआ संसार नहीं है। यह हरि का रूप है।

एह जग सच्चे की है कोठड़ी,
सच्चे का विच वास।।

कहते हैं, यह सब उसी (प्रभु) का इज़हार है। कोई जगह ऐसी नहीं, जहां वह नहीं है। उसकी आँख के बनने का सवाल था। मगर यह कब हो सकता है?

गुरु प्रसादी बूझिया, जां वेखां वही सब है।

गुरु कृपा से यह हो सकता है, बूझिया, इकरार करते हैं गुरु अमरदास जी साहब, हमने बूझा है। "गुर प्रसादी बूझिया जां वेखां वही सब है, हरि बिन अवर न कोय।" इकरार कर रहे हैं, कि वाकई हरि के बगैर यह कुछ नहीं है। यह सारा वह अपना आप ही उसका है।

कहे नानक यह नेत्र अंध थे,
सत्गुरु मिलिये दिव्य दृष्टि होई।।

यह आंखें अंधी थीं, सत्गुरु के मिलने से दिव्य दृष्टि हो गई।

सत्गुर मिले अंधेरा जाय।
जां देखां तहां रहेया समाय।।

तो यह शरीर भी तब ही परवान हो सकता है—"जो सत्यगुरु स्यों चित लाय।" मनुष्य जीवन परवान नहीं, जो विषय-विकारों में लम्पट है, बार-बार प्रभु से दूर जाने का सामान हो रहा है। अरे वह शरीर काहे को है। वह शरीर भी पूजने के काबिल नहीं रहता। आज जहां-जहां वह महापुरुष, जो प्रभु की दरगाह में परवान हो गये, उनका नाम ले-लेकर दुनिया जीती है। जहां उन्होंने पांव रखा, वह तीर्थस्थान बन गये। बड़ाई है ना उनकी! तो कहते हैं, वह शरीर परवान हो सकता है। कब? जब सत्स्वरूप हस्ती से चित्त

लगाओ। वह हमें बतलाता है, कि मनुष्य जीवन से पूरा फायदा हम कैसे उठा सकते हैं, और कैसे उसको, प्रभु को, प्रगट कर सकते हैं? उसके लिये एक ही जवाब दिया है, कि हमारा शरीर भी परवान हो सकता है, प्रभु भी घट में प्रगट हो सकता है—शरीर से फायदा यही है ना, मनुष्य जीवन पाकर प्रभु को पाया। उसके देखने वाले भी बन सकते हो, जब तुमको सत्स्वरूप हस्ती के चरणों में बैठना नसीब हो जाये। फिर वह कानों को address (संबोधन) करते हैं।—

ऐ श्रवणो मेरियो हरि साचे सुणने नूं पठाये ॥

हरि ने लगाये थे, वह साचा सुनना जो था, जो Music of the Spheres (मंडलों का संगीत) हो रहा था, Pythagorus (पैथागोरस) जिसको कहता है, Music of all Harmonies (सब स्वरों की जान है जो संगीत), उद्‌गीत और नाद हो रहा था, अखंड कीर्तन हो रहा था—सतत कीर्तन जिसको कहा है—उसको सुनने के लिये यह कान लगाये थे।

साचे सुणने नूं पठाये शरीर लाये,
सुणो सतबाणी ॥

उस सतबाणी को सुनना था। हम माया की बाणी को सुनते रहे, फैलाव की बाणी, बाहरमुखी बाणी;—

जित सुणे मन-तन हरेया होया,
रसना रस समाणी ॥

जिसको सुनने से तन-मन हरा हो जाता है। फिर कहा सिर से पांव तक ठंडक पड़ जाती है।

सत अलख वडाणी ताकी,
गति कही न जाय ॥

वह अलख है। जब तक इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आता वह आवाज़ चलती नहीं।

कहे नानक अमृत नाम सुणो पवित्रो,
साचे सुणने नूं पठाये ॥

वह अमर कर देने वाला नाम, परिपूर्ण परमात्मा, उसके सुनने को तुमको पठाया था, मगर तुमने उससे पूरा फायदा नहीं उठाया। तो पहले शरीर से सवाल करो, अरे तूने यहां आकर क्या किया? वही काया अति सुन्दर है, गुरू अमरदास जी साहब ने फरमाया:—

काया कामण अति सुवालियो,
पिर वसे जिस नाले ॥

वह काया अति सुंदर है, जिसके अन्तर वह प्रभु प्रगट हो रहा है। बाकी जितनी (काया) हैं, वह (प्रभु) प्रगट नहीं। याद रखो—मैंने एक किताब पढ़ी थी, एक लड़की थी, बड़ी बदसूरत। West (पश्चिम) में यह ना, आप ढूंढते हैं (वर)। कोई उसको कबूल नहीं करता था। निराश होकर एक गांव में चली गई। जब हार जाए तो प्रभु की याद ही आती है ना! प्रभु की याद में दिन गुज़ारने लगी। साल-दो साल गुज़र गये। क्योंकि उस की याद में भी तो रंग आता है ना, आत्मा, रूह को। रूह को रंग मिलता है। दो-चार साल बाद एक लड़का आकर कहने लगा, अरे भई मैं तुझसे शादी करना चाहता हूं। कहने लगी, हैं! तू मुझसे शादी करना चाहता है? मैं किसी को पसंद नहीं। कहने लगा, तू अपनी अब शकल देख, क्या है। अरे प्रभु की याद में रंगत भी खूबसूरत हो जाती है। हम जो अब टायलेट से काम लेना चाहते हैं ना, वह टायलेट के बगैर होजायेगा, ख्याल से, याद रखो, प्रभु की याद से, ख्याल अति सुन्दर हो जाया करते हैं, और इतने सुन्दर होते हैं, जिसका लफ्ज़ों में बयान नहीं हो सकता। उस सुन्दरता को पाने के लिये—"काया कामण अति सुवालियो पिर वसे जिस नाले"—जिसके अन्तर प्रभु प्रगट हो जाये, जो आत्मा मन-इंद्रियों से

आज़ाद होकर उसका रंग ले, वह आगे ही, All-Beauty, All-Glory, All-Love है, और:—

Love beautifies everything.

प्रेम हरेक चीज़ को खूबसूरत बना देता है, आंखों में टहक ले आता है, मुरदों को ज़िंदा कर देता है।

अज़ मुहब्बत मुरदा ज़िंदा मी शवद।

मुर्दे भी ज़िंदा हो जाते हैं।

अज़ मुहब्बत खार हा गरदद गुलाब।

कांटे भी गुलाब बन जाया करते हैं। आत्मा में जब उसकी याद आती है, तो अंतर में जो उसका प्यार है, उभर आने से, रंग, सब चिन्ह-चक्र निखर जाते हैं। तो इसलिये सारे महापुरुष यही कहते हैं कि—"सा काया जो सतगुर सेवे सच्चे आप संवारी"—काया वही अति सुंदर है, जिसमें वह प्रभु आप प्रगट है। प्रभु ने अपने हाथों से इसे बनाया है। इसमें खुशबू आनी चाहिये, मगर बदबू आती है। हम टायलेट बरतते हैं, दूसरे दिन फिर वही बदबू। दिन में कई तरह के टायलेट लगाते हैं। अरे जो कुदरती सुंदरता है, वह रूह (आत्मा) में है। जिस रूह में प्रभु का प्यार हो, क्यों नहीं रूह टहकेगी। तो पहला तो वह कहते हैं, मनुष्य जीवन भागों से मिला है। जिनका लेना-देना है, खुशी से निभाओ। प्रभु ने जोड़ा है ना! और कोई नहीं तुम्हारे रिश्तेदार बन गये। यह प्रारब्ध कर्मों के अनुसार है, इसको खुशी से निभाओ। और यह सब कुछ करते हुए अपने आदर्श का ख्याल करो। मनुष्य जीवन तुमको भागों से मिला है। हैवान (पशु) वह काम नहीं कर सकते जो आप कर सकते हो। इस वक्त हम जो जिस्म रखते हैं, यह बड़े भागों से मिला है। बहुत सारा हिस्सा वक्त का गुज़र चुका है, थोड़ा बाकी है। थोड़े से ही, जो समय है, फायदा उठाओ। वह फायदा उठाना क्या है? किसी सत्स्वरूप हस्ती के चरणों में लगो। आपको वह संयम का जीवन बतायेगा। पहली बात जो वह आपको कहेगा, वह यही कहता है:—

कामक्रोध काया को गाले,
ज्यों कंचन सुहागा ढाले।

काम और क्रोध काया को गाल (गला) देते हैं। जैसे सोने को गालना हो तो सुहागा डालो, वह पानी बन जाता है, पिघल जाता है। ऐसे काया का सत्यनास हो जाता है। तो काया का संयम हो। पर यह संयम कहां से मिलता है? किसी सत्स्वरूप हस्ती के चरणों में बैठकर जीवन पलटा खा जाता है। विषय-विकारी जीवन कुछ का कुछ बन जाता है।

जिन मानस ते देवते कीये करत न लागी बार।

हैवानों (पशुओं) से, पहले वह हमको इन्सान बनाता है, और इन्सानों से God in man (प्रभु में अभेद मानव) बनाता है। पहली बात वह man making करता है, सबको मानवता की level (दृष्टि) से देखना सिखाता है, सब को right understanding (सही-नज़री) देता है।

जिन्हां डिसंदड़ेयां मेरी दुरमत वंजे,
मित्र असाडरे सेही।

जिनके मिलने से हमारी दुरमति का नाश हो, वह हमारे सच्चे मित्र हैं। दुरमति का नाश होना, सही नज़री का मिलना, क्या है? और दुरमति क्या है? सब मानवता एक है, "मानुष की जात सब एके पहिचानबो।" हम पहले मानव हैं, फिर, जिस समाज में रहे वैसे कहलाये, जिस मुल्क में रहे वैसे कहलाये। All the same (यह सब होते हुए भी) हम इन्सान हैं, इन्सान के अंतर हम आत्मा-देहधारी हैं, embodied souls हैं और आत्मा की जात वही है जो परमात्मा की जात है। यह right understanding (सही-नज़री) है।

तिच्चर वसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल ॥
जां साथी उठि चल्लेया तां धन खाकुराल ॥

जिस्म की सहेली उस वक्त तक आबाद है जब तक इसका साथी इसके साथ है। कौन? हम। और हम इसमें कैद हैं, नहीं तो भाग जायें। आंखें खुली हैं, कान खुले हैं, नासिका खुली हैं, मुंह खुला है—भाग नहीं सकते। कोई चीज़ इसको कंट्रोल कर रही हैं। जब तक वह कंट्रोल करने वाली ताकत इसके साथ है हम जिस्म में कायम हैं। जब वह ताकत हटती है, यह जिस्म छोड़ना पड़ता है। अरे छोड़ने से पहले अगर हम उसके देखने वाले बन जायें, मनुष्य जीवन पाकर, तो कितने भागों की बात है!

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे,
ऐहला जन्म गंवाया ॥

यह ज़िन्दगी, कुछ और ज़िन्दगी है, जिसका हमें पता नहीं। जिस्म छोड़ना पड़ता है, हमेशा साथ नहीं रहता। यह जिस्म पहला संगी-साथी है आते हुए, जाते हुए साथ नहीं जाता। जो चीज़ें इस सबब करके बनी हैं वह कैसे साथ जायेंगी? मनुष्य जीवन का फायदा जो था, जिसने शरीर का मूल रचा था, उसको अन्तर में बसाना था। वह तो किया नहीं। वह ज्योति न रखता तो यह शरीर कैसे बनता, माफ़ करना। वह मूल था। उधर तवज्जो नहीं दी। समाजों में दाखिल हुए उसी को देखने के लिये, उस मूल को पहिचानने के लिये, मगर अनगहली (नींद) में पड़े रहे। तो मनुष्य जीवन का पाना बड़े भागों से होता है, वह हमें मिला हुआ है।

महापुरुष पहली तालीम यही देते हैं ब्रह्मचर्य की रक्षा। हजूर के जीवन में इसकी झलक मिलती है। २५ साल का ब्रह्मचर्य उनका पूर्ण था। शादी उनकी हुई, मगर मुकलावा नहीं हुआ। उन दिनों मुकलावे दो-दो साल नहीं होते थे। पति स्त्री का मुंह नहीं देखता था, दो-दो साल। शादी तो हो जाती थी, मगर देखना, मिलना नहीं था। दूसरी शादी होने तक—वह मैके घर में मर गई—२५-२६ साल के हो गये। उनकी (हजूर की) जिस्म की खूबसूरती की बुनियाद (नींव) ब्रह्मचर्य की रक्षा थी और आत्मिक खूबसूरती थी—दोनों चीज़ें थीं, मिल कर कुछ और रंग लाईं। जो भी उनको एक बार देख लेता था, "बड़ा शरीफ़ इन्सान है।" हज़ारों से एक बैठा हुआ निराला मालूम होता था। तो मैं यह अर्ज़ कर रहा था कि मनुष्य जीवन की बुनियाद ब्रह्मचर्य की रक्षा है। हम उस तरफ तवज्जो नहीं दे रहे। इसके तीन दर्जे पुराने ज़माने में थे। वह आदर्श हैं। कम से कम २५ साल तक तो सबका था। २५ साल तक वह आश्रमों में रहते थे, घरों का मुंह नहीं देखते थे। इसके बाद उनकी शादी होती थी। उसके बाद फिर ३६ साल का दूसरे दर्जे का ब्रह्मचर्य—३६ साल का। फर्स्ट कलास (प्रथम श्रेणी) ४८ साल का ब्रह्मचर्य होता था। जब मैदाने-जंग (युद्ध क्षेत्र) में उधर से मेघनाद आया—married (विवाहित) थे वह—तो उसके मुकाबिले में किसको भेजा गया? लक्षमन को, जिसका १२ बरस का ब्रह्मचर्य था। भई सीने पर हाथ रखकर बताओ तो कितना ब्रह्मचर्य है आपका? ६ महीने का भी किसी का नहीं होगा। किस मुंह से हम हल्वा खाना चाहते हैं माफ़ करना। गुरु नानक साहब कहते हैं:—

जिन बिंदु खोई तिन सब कुछ खोया।

तो ब्रह्मचर्य की रक्षा, chastity of life, जीवन की पवित्रता, यह सबसे बड़ी चीज़ है। गुरु नानक साहब को जनेऊ पहनाने की रस्म अदा करने लगे—हिंदु भाईयों में अब भी रस्म है, वह जनेऊ पहनाते हैं। जनेऊ में कई तारें होती हैं, कई तारों को मिलाकर बटा जाता है। तो गुरु नानक साहब को पहनाने लगे तो कहने लगे, यह

जो जनेऊ ऐ पांधे, तू बना रहा है, यह तो साथ जायेगा नहीं। यह तो मैला हो जायेगा, टूट जायेगा। अरे भई तेरे पास ऐसा जनेऊ है, जो मैं कहता हूं? क्या कहते हैं। कहते हैं।

जत कज्जी सत वट

कि रूई हो पवित्रता की, ब्रह्मचर्य की, जत की, और सत के उसमें बट डालो। जत और सत को कायम (प्रतिष्ठापित) किया है।

एह जनेऊ जिया का है तो पाँधे घत ॥

जो न मैला हो, न टूटे, न कोई और हो। तो मनुष्य जीवन धारण करने के लिये इस जिस्म की पहले बनावट का सवाल है। हम इस तरफ तवज्जो नहीं दे रहे, बाकी क्या बनेगा? हमारे घरों की हालत निहायत क़ाबिले रहम है। कोई अमीरी के घमण्ड में, कोई गरीब अमीरों की नक़ल में, अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं। मुझे साफ कहना पड़ता है। तो जीवन की पवित्रता;—

Blessed are the pure in heart for they shall see God.

जिनके हृदय पवित्र हैं, वही प्रभु को देख सकेंगे। वह मुबारिक (धन्य) हैं। पवित्रता क्या है? "हरि बिन अवर न देखो कोई।" यही तुलसी साहब ने फरमाया।

दिल का हुजरा साफ कर,
जानां के आने के किये।
ध्यान गैरों का उठा,
उसके बिठाने के लिये॥

दिल के हुजरे को साफ करो ताकि वह प्यारा प्रीतम तुम्हारे हृदय में बस सके। कहते हैं वह सफ़ाई क्या है? उसके सिवाय (प्रभु के सिवाय) और कोई ख़याल न रहे—न जिस्म का न ताल्लुकात का, न यह का न वह का। तो मैले हृदय में कोई नहीं आता भई। है हमारे अन्तर। हम चाहते हैं कि वह हमारे हृदय में प्रगट हो, मनुष्य जीवन पाकर, जो भागों से हमें मिला है। और काया भी वही सुखी हो सकती है, जिसके अन्तर शान्ति हो। जिसके अन्तर काम है, क्रोध है, विषय-विकार हैं, वह काया कैसे सुखी रह सकती है? बहुत खाने से रोग बढ़ेंगे, रोग से आगे सोग बढ़ेंगे, और क्या होगा? जिस शरीर की यह हालत हो वहां भजन क्या हो सकता है? तो सारे ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने इस बात पर ज़ोर दिया है, कि यह शरीर कायम रखो, जितनी देर रख सकते हो। यह भी भक्ति है। मगर इस शरीर के right use (सही इस्तेमाल) के लिये, फायदा उठाने के लिये, किसी सत्स्वरूप हस्ती से मिलो। काया वही सुन्दर है, कौन? "सा काया जो सत्गुरु सेवे सच्चे आप संवारी।" जो सत्गुरु के सेवने वाली है, वही काया अति सुन्दर है, बाकी काया काया कहलाने की हकदार नहीं। "ऐ काया मैं वृथ रुलदी देखी ज्यों धर ऊपर छार।" इसका क्या हशर (परिणाम) है! हाथों से निकल गई, या नसीब! फिर कब मिले! अब देखना यह है, कि इस काया में यह ज़लील-पना (अधः पतन) आता कैसे है? यह कल आपके सामने थोड़ा रख दिया जायेगा। फिर, आत्मा इससे आज़ाद होकर प्रभु को पा सकती है, इसके मुतअल्लिक कल शाम थोड़ा ज़िक्र कर दिया जागो। मतलब? किसी महापुरुष के जीवन से पूरा फ़ायदा उठाने के लिये उसकी तालीम को समझना चाहिये। शुक्राना, एक बात। मैंने अर्ज़ किया, महापुरुषों का शुक्राना दमादम होना चाहिये। उसके साथ-साथ- खाली शुक्राना ही करते रहें, जो तालीम उन्होंने दी, उसको जीवन में न धारण करें, जिस गति को वह पाये, उसको हम नहीं पायें, तो काम कैसे चले?

आपको पता है, चेला किसको कहते हैं? जिसको गुरु के कपड़े फिट आजायें, वह चेला है।

हम सब कोई कहते हैं हम चेले बन गये। आपको गुरु के कपड़े फिट आ गये? तब तो ठीक। हमने उनकी तालीम को धारण नहीं किया, उनके चेले कैसे बने? तो भाइयो! मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है, मोटी बात जो मैंने आपको कही। इसको कायम रखो। सारे महापुरुषों ने कहा है। मैंने कोई नई बात नहीं आपके सामने रखी। काया के सही इस्तेमाल के लिये किसी सत्स्वरूप हस्ती के चरणों में बैठो। वह आपको इसका ठीक संयम बतायेगा। और वही काया, जिसके अन्तर वह प्रगट है, जो प्रभु की दरगाह में परवान है बल्कि दुनिया की दरगाह में भी परवान है। बल्कि उस काया के एक-एक अंग के लिये, देखने को, यादगार के लिये दुनिया तरस रही है। हज़रत मुहम्मद साहब के मूंछ के बाल की कितनी भारी इज़्ज़त है सारे जहान में! जहां-जहां वह रहे, उस जगह की इज़्ज़त है। तो काया परवान हो गई प्रभु की दरगाह में, दुनिया में भी परवान हो जाती है।

तो आज के दिन पहली बात जो हमने उनके (श्री हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के) चरणों में सीखनी है, वह यही है। एक तो शुक्राना दमादम चाहिये। हम हैवान (पशु) से इन्सान बनें। पहली बात। इन्सान वही, जिसके अन्तर दूसरों का दर्द है, प्रभु का प्यार है, वह (प्रभु) सबमें है, सबका प्यार है, वही इन्सान है। बाकी सब हैवान (पशु) से बदतर हैं। तो महापुरुष हमें सिखलाते हैं, यह काया जो है, तभी हम इससे पूरा फायदा उठा सकते हैं, जब किसी सत्स्वरूप हस्ती के चरणों में हम जायें। बस। उसकी तालीम को हम धारण करें, चमचिच्चड़ की तरह थनों से लगकर खून न पीते रहें बल्कि तालीम को समझें। वह हज़ूर ने हमेशा हमारे सामने रखी, बड़े सादा लफ़्ज़ों में। सादा-सादा लफ़्ज़ों में असलियत के राज़ों (भेदों) को खोल-खोल के बयान किया। जिनको उन्होंने आंखें बख्शीं, वह तो देखने वाले बन गये, बाकी वैसे ही मुंद (बंद) रहे (नेत्र)। "सत्गुरु मिलिये मुंद थे," बंद थे (नेत्र), उनकी कृपा से खुल गये। तो बाकी कल सुबह, कल शाम, अर्ज़ किया जायेगा। इतना ही, जो थोड़ा बहुत आया है, हज़ूर की कृपा से, आपके सामने रख दिया गया। अब और कुछ भाई आपके सामने रखेंगे। गौर से सुनिये।

श्री मदन मोहन चोपड़ा का भाषण

विश्व धर्म सम्मेलन के सेक्रटरी, श्री मदन मोहन चोपड़ा ने कहा, मैं अभी सुन रहा था, एक-एक शब्द नपा तुला, वजनदार, स्वर्ण अक्षरों में लिखने वाला, जो दिल-दिमाग के अन्दर बैठता चला जा रहा था। यहां, महाराज जी के चरणों में आकर, कुछ अध्यात्म की, रुहानियत की, प्राप्ति होती है। बहुत दिनों से इस महापुरुष से मेरा सम्बन्ध रहा है। हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के चरणों में बचपन का ज़माना व्यतीत हुआ। वह नूर का सरचश्मा थे, क्या खूबसूरत शकल-सूरत थी, क्या रोब था, बादशाहों वाला—जैसे एक बड़े भारी समुद्र के किनारे आदमी खड़ा हो, पास जाने और कूदने से डरता हो, यह महसूस होता था मुझे उनके पास जाकर। और जब इन महाराज जी के दर्शन किये तो ऐसा महसूस हुआ जैसे गंगा नदी है बहती हुई, जिसके अमृत जल को आप कलेजे से लगा सकते हैं, उस

से प्यास बुझा सकते हैं। तो इस तरह यह दो सरचश्मे (स्रोत) मुझे नज़र आते हैं, श्री हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज और इस आश्रम के बानी (संस्थापक) हज़ूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज जो आपके सामने इस वक्त बैठे हैं।

क्यों लोग खिंचे चले आते हैं, दुनिया के कोने-कोने से, हजारों लाखों की संख्या में इस ज्योति स्रोत्र के पास? मुझे वह दृष्य भूलता नहीं जो ६ फरवरी १९६५ ई० को इन आंखों ने साथ वाले बाग में देखा, कि किस तरह हर देश के धर्मगुरु और जन नायक ने अपनी प्यार भरी श्रद्धांजली इन चरणों में अर्पित की, तो मालूम हुआ, क्या कशिश (आकर्षण) है जो खींचती है, तमाम दुनिया के लोगों को, इस आश्रम की तरफ, इस आश्रम के बानी की तरफ। और सब से बड़ी बात, वह शिक्षा है, जो उनसे मिलती है, जो इन्सान को इन्सान बना देती है और इन्सानियत को ऊपर उठाती है और जिस शिक्षा की इन्सानी जिन्दगी में बड़ी भारी ज़रूरत है। अभी कुछ क्षण पहले अपने एक बहुत ऊँचे मित्र के घर से मैं चला आ रहा हूं। वह चले गये यहां से, इस आश्रम से भी—मेरा मतलब स्वर्गीय श्री धर्मदेव शास्त्री जी से है। बहुत ऊँचा बौद्धिक स्तर था उनका। आर्य समाज के बड़े भारी नेता वह रहे। किसी चीज़ को वह accept नहीं करते थे, लेकिन आप को मालूम हो, जीवन के आखिरी दिनों में, एक जबरदस्त तड़प थी उनको, इस किसम की तड़प जो शायद मछली को पानी से न होगी और वह यह कि अन्तिम स्वासों से पहले महाराज जी उनको आशीर्वाद दे सकें और वह हज़ूर के दर्शन कर सकें। एक अजीब बात है यह कि हमारे एक बौद्धिक आदमी, जो आर्यसमाज के नेता रहे हों, उनके हृदय के अन्दर इस प्रकार का प्यार लहरें लेता हो, महाराज के प्रति।

मैं समझता हूं कि न सिर्फ़ इस स्टेज के, इस आश्रम के, अच्छे भाग हैं, बल्कि मानवता के अच्छे भाग हैं कि इस जमाने में हम सब यहां आये और इनके चरणों में रहकर एक अज़ीम (महान) इन्सान बनने का, विश्व प्रेम और विश्व भ्रातृत्व का सबक हम सीखते हैं, और साथ में रूह को समझने का मौका मिलता है, और इनके आशीर्वाद से शरीर से ऊपर उठकर उन दृष्यों को देखने की प्रतीक्षा में हम रहते हैं। जरूरत इस बात की है, जो शिक्षायें अभी सुन रहे थे, उनको अंगीकार करना ज्यादा जरूरी है, और सब बातों से। इतनी बात कहकर मैं हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के चरणों में अपनी श्रद्धांजली पेश करता हूं, और यह प्रार्थना करता हूं, कि जिस मार्ग पर हमारे मास्टर, हमारे पथप्रदर्शक, हमारे उपकार कर्ता लेजाना चाहते हैं, उस रास्ते को अख्त्यार करें तभी हमारा उनसे प्यार है, तभी उनके प्रति हमारा सन्मान है।

मौलाना साहब का भाषण

सब्जी मण्डी के वयोवृद्ध मौलाना साहब (नाम याद नहीं) ने कहा, अमल से आमिल होता है। भाईयो, बहिनो, जो घरबार छोड़कर आती हो, जो महाराज जी वचन कहें उस पर अमल करो। अमल करने वाले को कोई बात की कमी नहीं रहती। मैं ढूंढ़ता था जिसको, वह मुझे मिलगया। खुदा भी मिला, खुदा का रसूल भी मिल गया। जो इनकी मुहब्बत मेरे दिल में है—मुझे मालम नहीं

था दिल्ली में क्या है ? मगर सुना करता था सावन आश्रम है। एक दिन बैठे-बैठे—नींबू बेच रहा था, इतवार का दिन था, एक जेठा साहब हैं, सिन्धी हैं, कहने लगे, चल आज तुझे दिखाते हैं, आश्रम। मैंने कहा, चल। सिन्धी है, सबसे प्यार मुहब्बत करता है। मेरा भी यही असूल है। हमारे पैगम्बर आंहज़रत सल्लम फरमाते हैं, यह हुक्म है रब का, कि जो मेरी मख़लूक से मुहब्बत करेगा, मैं भी उससे मुहब्बत करूँगा। तो मैं आया। आकर देखा, तमाम मख़लूक बैठी हुई है ख़ुदा की। मैंने दिल में कहा, मैं आगया अपने घर।

उस दिन से जो मुहब्बत है महाराज जी से मेरे दिल में है, मैं बयान नहीं कर सकता। परसों शाम मुझे मालूम हुआ कि महाराज जी की तबीयत ख़राब है—मुझे काम था बाहर, इसलिये मौका नहीं मिला आने का, अगरचे तड़पता रहा आने को—मगर रात को ख्वाब में देखा, मैं आपके (हजूर के) पास बैठा हूं। मुझे तमाम रात नींद नहीं आई (यह कहते हुए मौलाना साहब की आंखें भर आईं) रात भर नींद नहीं आई मुझे। घर वाली भी कहने लगी, क्या बात है। अल्लाह का फ़ज़ल है। साहिबे औलाद भी हूं। वह कहे बात क्या है ? क्या बताता ? मैं एक वक्त रोज़ा रखता हूं। साढ़े तीन बजे नमाज़ पढ़ी मण्डी में और आके कल मुलाकात करी महाराज जी से। तो मैं ज्यादा क्या कहूं, सिवाय इसके कि कहना मानो, सब कुछ मिलेगा। मेरा शाम की नमाज़ का वक्त होगया, इजाज़त चाहता हूं।

अन्त में दर्शनसिंह ने यह भावपूर्ण कविता पढ़कर सुनाई।

ख़ुदा का नूर मुरशिद में भला मालूम होता है।
यह आईना वह है जिसमें ख़ुदा मालूम होता है।
ख़ुदा की शान बन्दे में ख़ुदा मालूम होता है।
मैं हैरां हूं कि इस पर भी वह नामालूम होता है।
तेरे दर पर नहीं तखसीस कुछ अपने-पराये की।
ज़माने भर का तू मुश्किलकुशा मालूम होता है।
ख़ुदा गर नाख़ुदा होगा तो होगा मुझसे क्या मतलब।
मेरी किश्ती का सावन नाख़ुदा मालूम होता है।
मुझे दरकार है तेरी फ़क़त चश्मे मसीहाई।
मेरे हर दर्द की तू ही दवा मालूम होता है।
अता ख़ुमखानाये उल्फत से हो इक जाम दर्शन को।

हजूर महाराज (टोककर) सब को क्यों नहीं भई ?

दर्शनसिंह—हजूर महाराज जी ने संशोधन कर दिया है इस तुक में। अब यह यूं है।

23

अता खुमखानाये उल्फत से हो इक जाम हर रिन्दको।
कि हर मैकश गदाये बेनवा मालूम होता है।

दर्शनसिंह की कविता के बाद जन्मदिवस के भण्डारे का पहला सत्संग समाप्त हुआ। अभी एक दिन पहले सख्त बीमारी से उठने के बाद हजूर के स्वास्थ्य की हालत यह थी कि डाक्टर ने चलने-फिरने-बोलने की मनाही कर रक्खी थी—फिर भी हजूर सारा वक्त स्टेज पर बैठे रहे, यद्यपि सत्संग प्रवचन अधिक लम्बा नहीं किया। थोड़े ही समय में हजूर ने परमार्थ के विषय को खोल-खोल कर बड़ी सादगी और खूबसूरती से बयान कर दिया।

दमा, बवासीर और भगन्दर के
माने हुए चिकित्सक

वैद रामजीदास शर्मा

शर्मा औषधालय, बसन्त नगर, बाग कड़ेखां,
किशनगंज, दिल्ली-७

Grand Clearance Sale

OF

READYMADE CLOTHES, COTTON, WOOLLEN, TERYLENE

AT

Throw-away prices to suit every pocket

•

Bush Shirts, Pants, Shirts, Frocks,

Baba Suits, Jurseys, etc.

•

Visit Your Own Shop :

PANDITJI **29/1, Shaktinagar, Delhi-7.**

हजूर महाराज के सत्संग वचन-पिछले अंक से आगे

तो नाम का रस, थोड़ा परिचय, अनुभवी पुरुष द्वारा जब मिल जाए तो वह अंकुश बन जाता है, जिससे मन काबू आ जाता है, सब विषय-विकारों को छोड़ देता है। नाम में महारस है,—

बिन रस चाखे बुडगई सगली,
सुखी न होवे जीयो।

यह रस कैसे मिलता है? कहते हैं,—

मान महत सकत नहीं,
काई साधां दासी थीयो।

साधु के दास बनो। न बुद्धि बल से, न रुपये के बल से, न हुकूमत के बल से, यह चीज़ मिलेगी। साधु के दास बनो। साधु कौन ? "साध प्रभु भिन्न-भेद न भाई।" बड़े साफ़ लफ़ज़ हैं।

(१४) **मोल कितही नाम पाईये नांहि,**
नाम पाईये गुरु विचारा।

तो नाम सबसे बड़ी हुई ना चीज़? "जिन्नी नाम ध्याईया गये मुसक्कत घाल।" किसी समाज में रहो, कहते हैं, किसी कीमत पर यह चीज़ नहीं मिल सकती। न बाजूबल, न बुद्धि बल, न रुपये के बल से। कैसे मिलती है? गुरु विचार द्वारा, अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठकर, सही-नज़री पाने पर– "गुरु काढ तली दिखलाया।" ऐसे दे देता है। यह नहीं कहता, किये जा, आहिस्ता आहिस्ता हो जायगा। गुरु की निशानी यह है। "काढ तली दिखाया।" एवं ब्रह्म करके दे देता है। बाणी तो यह कह रही है। लोग कहते हैं, किये जाओ, आहिस्ता-आहिस्ता हो जायगा। भई कैसे हो जायगा? यह इन्द्रियों के घाट का रूप बना बैठा है। साधन वह करता है, जिस का ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। अरे भई इन्द्रियों के घाट से ऊपर कैसे जा सकता है? सारी उमर करते रहो। नेक कर्म जरूर है, नेक फल मिलेगा। मगर, "नेक कर्म और बुरे कर्म, जीव को बांधने के लिये दोनों एक जैसे हैं, जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी।" तो यह एक पूँजी दी जाती है, "सन्तन मोको पूंजी सौंपी।" जैसे एक आदमी आपको business (व्यापार) के असूलों पर लैकचर दे, बड़ी आला तक़रीर (भाषण) करे, मगर वह ऐसे लोगों को लैकचर दे जिनके पास पैसा ही नहीं! फिर? कोई पूँजी देनी चाहिये ना थोड़ी बहुत, तभी बढ़े। खाली अक्षरों का बताना काफ़ी नहीं। यह अक्षर तो जाप के लिये हैं ना!

गुरु बचनी हरि नाम उचरो।

Charging होगी, मगर जब तक पूंजी न मिले, रूह उपर नहीं जाती। तो कहते हैं, कि जिसको वह मालिक दे, परमात्मा दे, The God in man (मानव देह में प्रगट परमात्मा) दे, वही उसको पा सकता है। यह चतुराईयों का मज़मून नहीं, cleverness का नहीं, बुद्धि का नहीं। जब तक बुद्धि भी स्थिर नहीं हो, आत्मा का साक्षात्कार नहीं होता। आपको पता है, सारा जपजी का उपदेश देकर आखिर क्या कहते हैं?

जोर न मंगन, देन न जोर।
जोर न जीवन, मरन न जोर।

जोर न राज माल मनसोर।
जोर न सुरति ज्ञान विचार।
जोर न जुगति छुटे संसार।
जिस हत्थ जोर कर वेखे सो।

तो यह उसकी मरजी है। हवाले करना है, जिसको वह मालिक दे।

धुर कर्म पाया तुध जिनको,
से नाम हरि के लागे।

जिसको वह आप मालिक दया करे, वह उस नाम के साथ लग सकता है। उसके अन्तर ज्योति का विकास है। जिसके अन्तर ज्योति प्रगट हुई उसका नाम खालसा है।

पूरण ज्योति जगे घट में,
तांहि खालस तांहि नखालस जानो।

अगर ज्योति नहीं जगी, स्कूल का लेबल जरूर लगाया है, अभी ख़ालसा नहीं बने।

ख़लसा मेरो रूप है ख़ास।
खालसा में हौं करूं निवास।
खालसा मेरो सतगुरु सूरा।

फिर? जिसके अन्तर ज्योति प्रगट हो, धुनि जारी हो, इसी का नाम सच्ची पूजा है, हिन्दुओं की। मुसलमान वह है, जो ख़ुदा के नूर को देखता है। ईसाई वह है, जो Light of God को देखता है। भई ज़िन्दगी तो एक ही है, किसी समाज में रहो। तो किसी समाज में रहो, गुरुमुख बनो, किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठो। और वह महापुरुष हमेशा आते हैं, हरेक समाज में आते रहे, किसी एक समाज का reserved right नहीं। गुरु अर्जन साहब ने इस भूल को निकाल दिया, सब महात्माओं की वाणी, जो अनुभवी थे, इकट्ठी कर दी। We worship all (सब हमारे पूज्य हैं), रविदास जी चमार की वाणी भी है, कबीर साहब जुलाहे की भी है। अरे जहां वह (प्रभु) manifest (प्रगट) हो, उसके चरणों में बैठो। वह तुम को काया को खोजने की तालीम देगा। बाहिरी सिलसिला भी—"मानुष की जात सब एके पहिचानिबो"—यह Level (दृष्टीकोण) देगा, आत्मा का Level देगा। मगर असल काम उसका है, "गुरुमुख हो सो काया खोजे," काया को खोजने की तालीम देगा, कैसे जिसम से ऊपर आना हो सकता है? demonstrate (साक्षात्कार) करेगा।

(१५) काया अन्दर भौ भाव वसे,
गुर परसादी पाई।

कहते हैं प्रभु को हम पा सकते हैं, गुरु कृपा से, जब उसका भौ (भय) बने और प्यार बने। जिसका प्यार होगा उसका डर भी होगा कि वह हाज़र-नाज़र बैठा है।

पूरु गुरु का सुन उपदेश।
पारब्रह्म निकट कर पेख।

वह परमात्मा अन्तर बैठा हरेक काम को देख रहा है। भय बन गया। और प्यार बनता है। पर यह पूरे गुरु की कृपा से हो सकता है। है हम में।

(१६) काया अन्दर ब्रह्मा विष्णु महेशा,
सब ओपत जित संसारा।

दुनिया तीन देवतों को पूजती है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश। इस काया में तीनों बस रहे हैं। समझे? ब्रह्मा का काम है, पैदा करना। वह इन्द्री चक्र में है। विष्णु का काम है पालना। वह नाभी चक्र में है। और शिव भगवान का काम है नाश करना। वह हृदय चक्र में है। तीनों इस (देह) के बीच में हैं। रूह जब ऊपर जाती

है, तीनों का काम खत्म हो गया। कौन बड़ा हुआ भई ? परमात्मा के बनाये हुए हैं ना !

एका माई जुगत लियाई तिन चेले पर्वान।
इक संसारी, इक भंडारी इक लाये दीवान।
ओह वेखे ओन्हा नदर न आवे।

जिसने इनको बनाया है उसको तो वह देखते नहीं। फिर ? जिसने बनाया, उसको तुम पूजो। तो ईश्वर व्रती होना सबसे बड़ी बात है। सबके लिये इज़्ज़त है हमारे दिल में, मगर जब तक ईश्वरव्रती नहीं, उससे मिलाप नहीं, आना-जाना खत्म नहीं। वह अपना वर दे सकेंगे, मरकर लोक भी दे सकेंगे, मुक्ति नहीं दे सकते।

(१७) सच्चे अपना खेल रचाया,
आवागवन पसारा।

उस मालिक ने यह खेल रचाया, पैदा करने की शक्ति दी, पालने की शक्ति, नाश करने की शक्ति—तीनों। त्रिलोकी बनाई, काम चलने के लिये। उसकी मरज़ी है। एक खेल बनाया उसने। तो इनके (ब्रह्मा, विष्णु, महेश के) पास मुक्ति नहीं। वह भी तुम्हारे अन्तर में हैं। wonderful house we live in (यह मानव देह आश्चर्यजनक मकान है जिस में हम रह रहे हैं)।

(१८) पूरे सतगुरु आप दिखाया,
सच नाम निस्तारा।

अब गुरु अमरदास जी कहते हैं, पूरा गुरु मिला, उसने यह सब कुछ हमें दिखाया। खण्ड, मण्डल, ब्रह्माण्ड भी इसमें हैं, तीनों देवता भी इस में हैं। अरे परमात्मा आप इसमें बैठा है, गुरु ने हमको दिखाया। यह नहीं कहा मरकर दिखाया है। जीते-जी। अरे गुरु वही जो जीते-जी दिखाये, थोड़ी पूंजी दे। फिर उसकी हिदायत के मुताबिक काम करो, तरक्की कर सकते हो। थोड़ी मिल जाये पूंजी, ज्यादा बढ़ाओ। मगर गुरु उसी का नाम है, जो अन्धेरे में प्रकाश करे। गये भी आंखें बन्द, आये भी आंखें बन्द, तो फायदा क्या ? हम गुरु के पास जाने से पहले अन्धे होते हैं। अन्धे की तारीफ़ क्या दी है ?

अन्धे से न आखियन जिन मुख लोईण नांहि।
अन्धे सेई नानका जे खसमों कुत्थे जांहि।

अन्धा उनको नहीं कहा जाता जिनके चेहरे पर आंखें नहीं, बल्कि अन्धा वह है जिसकी अन्तर की आंख नही खुली, उसको (प्रभु को) देख नहीं रहा। जब जाते हैं गुरु के पास, पहले अन्धे होते हैं, फिर आंख वाले बन जाते हैं, देखने वाले हो जाते हैं। ज्योति का विकास होता है अन्तर। पहले बहरे होते हैं, फिर उसके सुनने वाले बन जाते हैं। नाद का अनुभव हो जाता है। यह है निशानी। कितना खोलकर समझाया है।

(१९) सा काया जे सतगुर सेवे,
सच्चे आप संवारी।

अब कहते हैं वही काया कहलाने की हकदार है, जो सतगुरु के सेवने वाली है, जिस काया को मालिक ने आप बनाया है, अपने हाथों से। बाहर के मकान तो हम बनाते हैं, यह जिस्म तो प्रभु ने बनाया है ना। वह बनाकर आप साथ इसके बैठा है। तो सतगुरु को जो सेवने वाला है उसी की काया सचमुच काया कहलाने की हकदार है, बाकी की नहीं।

(२०) विन नावें दर ढोई नाही,
तां जम करे ख्वारी।

जब तक नाम, वह परमात्मा, घट में प्रगट नहीं होता, आना-जाना खत्म नहीं होगा, जन्म-मरण रहेगा। समझे ? आपको पता है, सनातनी भाईयों में क्या करते हैं, अन्त समय आता है तो ?

कहते हैं जल्दी करो, दीवा मन्साग्रो। हाथ पर दीवा रख देते हैं, ज्योति जगा कर। कहते हैं, ज्योति में ध्यान दो। और मन्त्र पढ़ देते हैं, यह दीवा तुम्हारा सहाई हो। अन्तर में एक ज्योति जग रही है—"दीवा बले अथक"—महापुरुष पहले दिन तुम्हारा दीवा मन्सा देते हैं। जब ज्योति जग गई (अन्तर) दीवा मन्सा गया कि नहीं? तो संसार सागर से तरने के लिये नाम का विकास चाहिये, ज्योति का विकास चाहिए, नाद का अनुभव चाहिये। तो यह चीज कहां से मिलती है? किसी अनुभवी पुरुष से, जिस काया के अन्तर वह (प्रभु) प्रगट हो गया-- "बिन नावें दर ढोई नाहीं तां जम करे ख्वारी"-- जिसके अन्तर वह प्रगट नहीं, उसका हिसाब-किताब होगा। तो गुरु करता क्या है? "धर्मराय दर कागत फाड़े नानक सब लेखा समझाय।" wind up (हिसाब खत्म) कर देता है, धर्मराज का, आना-जाना सब खत्म। "धर्मराय की काण चुकाये बिख दुविधा काड कढीजे।" ज़हर में डूबी हुई रूह को ऊपर खींचता है। "खेंचें सुरति गुरु बलवान।" नाम के साथ जोड़ देता है, तो धर्मराय की काण खत्म हो जाती है। यह गुरु करता है। गुरु का मिलना बड़े भागों से होता है, "कर्म होए सत्गुरु मिलाए, सेवा सुरति-शब्द चित्त लाए।" बड़े भागों की बात है। गुरु अव्वल मिलता नहीं। मिल भी जाए, फिर भी हम अनगहली (बेपरवाई) करें तो कितनी बदकिस्मती है! अब निशानी क्या है मिलने की? कि कुछ पूँजी मिले, यह देखने वाला बने, खुद इकरार करे।

जब लग न देखूं अपनी नैनी,
तबलग न पतीजूं गुरु की बैनी।

बस। full conviction (पूर्ण विश्वास) तभी बनेगी, जब यह देखेगा, अपनी आंखों से। ग्रन्थों-पोथियों के पढ़ने से थोड़ा experimental measure (तजरबे) के लिये ख्याल बन सकता है, conviction होगी जब देखने वाले बनोगे।

(२१) नानक सच वडियाई पाये,
जिसनूं हरि कृपा धारी।

कहते हैं, वडियाई (बड़ाई) किसको मिलती है? जिसको मालिक आप दया करे। जब दया करता है, किसी सत्स्वरूप हस्ती का मिलाप होता है। वह इस काया को खोजने का तरीका demonstrate करता है (करके दिखाता है) experience (अनुभव) देता है, साथ guidance (पथप्रदर्शन) बाहर भी करता है, जब पिण्ड को छोड़ जाओ तो साथ अन्तर भी करता है।

नानक कचड़ेयां संग तोड़,
ढूंढ सज्जन सन्त पक्केयां।
इह जीवन्दे विछड़े ओह,
मोयाँ न जाही संग छोड़।

अरे भई यह तारीफ़ गुरु, साधु, सन्त की महापुरुषों ने की, इसका कुछ मतलब है, नहीं तो आज बट्टा उठाओ तो गुरु, साधु, सन्त मिलते हैं माफ़ करना। इस अनुभव का महापुरुष मिलेगा, उसकी यही निशानी है। जब तक ऐसा महात्मा न मिले, कल्याण कोई नहीं। पूँजी मिले। नाम से मुक्ति है ना! यह गुरु अमरदास जी का शब्द था, जो आपके समाने रखा गया। किन को उपदेश है? as a man problem (सब मनुष्य जाति के लिये) है।

महापुरुष साखी बोलदे सांझी सकल जहाने।

ऐसे पुरुष का क्या काम है? सबको मिलाकर बैठना। सबको इन्सान की, मानव की level (दृष्टि) से देखता है, या आत्मा की, या परमात्मा सब का जीवन आधार है।